एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

श्री विक्रम संवत 2083 | बरेली | सोमवार, 27 अप्रैल 2026, वर्ष

PAGE NO, IV, TOP

'पौलस्त्य' में रावण के अनकहे पहलू किए उजागर

कार्यालय संवाददाता, बरेली

• एसआरएमएस रिद्धिमा में नाटक का किया गया मंचन

पौलस्त्य नाटक का मंचन करते कलाकार। • अमृत विचार

अमृत विचार: एसआरएमएस रिद्धिमा में रविवार को डॉ. प्रभाकर गुप्ता लिखित कहानी एवं अश्वनी कुमार द्वारा नाट्य रूपांतरित 'पौलस्त्य' का मंचन हुआ। विनायक कुमार श्रीवास्तव निर्देशित इस नाटक में भारतीय पौराणिक कथाओं के जटिल और बहुपक्षीय पात्रों में से एक पौलस्त्य (रावण) के जीवन के अनदेखे आयामों को उजागर किया गया। रावण को शिवभक्त, विद्वान, राजनीतिज्ञ, संगीतज्ञ और धर्मशास्त्रों के ज्ञाता के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

नाटक का आरंभ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा अनरण्य और युवा रावण यानि दसग्रीव के द्वंद्व युद्ध से होता है। दसग्रीव अनरण्य को तो पराजित करता ही है साथ में उसके इक्ष्वाकु कुल का भी अपमान करता है। इससे नाराज अनरण्य दसग्रीव को शाप देता है कि हमारे कुल में पैदा वीर ही तुम्हारा अंत करेगा। कुछ समय बीतने के बात रावण को अनरण्य का शाप याद आता है कि राम कहीं उसी का हेतु बन कर तो नहीं आए हैं। दूसरी तरफ सागर में सेतु के लिए राम ने शिवलिंग स्थापित किया है। शिवलिंग की पूजा के लिए यं रावण को पुरोहित के रूप में आमंत्रित किया जाता है। रावण शत्रुता से ऊपर उठकर अपने ब्राह्मण धर्म का निर्वहन करता है। यह प्रसंग दर्शाता है कि धर्म और कर्तव्य, वैर से भी ऊपर हो सकते हैं। किन्तु ये पूजन बिना पत्नी के संभव नहीं हो सकता।

इसलिए रावण सीता को पूजन में ले आता है और यज्ञ के बाद उसको वापस लंका ले आता है, क्योंकि रावण को पता है कि नियति को पूर्ण करने के राम को युद्ध के लिए लंका आना ही होगा। रावण पुरोहित के रूप में राम को लंका विजय का भी आशीर्वाद देता है। राम से युद्ध में रावण मारा जाता है। इस दौरान रावण कहता है कि शत्रु हमेशा मित्र से श्रेष्ठ होना चाहिए, क्योंकि संसार हम सब का मूल्यांकन मित्र से नहीं शत्रु की ऊंचाई से करता है। वह कहता कि जीवन के रहस्यों को हमेशा गुप्त रखना क्योंकि उसके छोटे भाई विभीषण को उसकी मृत्यु का गूढ़ रहस्य मालूम था। वही उसकी मृत्यु का कारण बना। नाटक में रावण की भूमिका विनायक श्रीवास्तव और राम की भूमिका गौरव कांकी ने निभाई। लक्ष्मण के रूप में मानेश यादव और सीता के रूप में अदिति भारद्वाज नजर आए। एसआरएमएस ट्रस्ट के संस्थापक एवं चेयरमैन देव मूर्ति, आशा मूर्ति, आदित्य मूर्ति, ब्रह्मा मूर्ति, देविशा मूर्ति, उषा गुप्ता, डा. रजनी अग्रवाल, डा. प्रभाकर गुप्ता, डा. शैलेश सक्सेना, डा. रीता शर्मा समेत अन्य लोग मौजूद रहे।